आरती श्रीगुरु नानकदेव जी की

गगन में थालु रविचन्दु दीपक बने,
तारिका मण्डल जनक मोती ।
धूपुमल आन तो पवणु चंवरो करे,
सगल बनराई फूलन्त ज्योति ।।
कैसी आरती होई भव खण्डना, तेरी आरती ।
अनहता सबद बाजत भेरी । रहाउ ।
सहस तब नैन नन नैंन है तोहि कउ,
सहस मूरति नना एक तोही।
सहस पद विमल ननस एक पद गंध बिनु,
सहस तब गन्ध इव चलत मोही ।
सभ महि ज्योति ज्योति है सोई,
तिसकै चानणि सभमहि चानुणु होई ।
गुरसारवी ज्योति परगटु होई,
जो नित भावे सु आरती होई ।
हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो,
अन दीनो मोहि आहि पिआसा ।
कृपा जल देहि नानक सारिंग कउ,
होई जाते तेरे नामि वासा ।

विवरण

आकाश रूपी थाल में रवि और चन्द्रमा जहाँ दीपक के सदृश दिख रहे हैं, आकाश मण्डल के तारे जहाँ मोतियों के समान चमक रहे हैं, जहाँ पवन देवता खुद चँवर डुला रहे हैं, जिससे चारों तरफ ज्योति फैली हुई है । हे भवखण्डन ! (मुक्ति दिलाने वाले) ये कैसी आपकी आरती है । नगाड़े की ध्वनि जहाँ वृहद् रूप से बज रही है ।

ऐसे में हमारे नयन सहज ही उधर की ओर चले जाते हैं । आप

अत्यन्त सौम्य
रूप वाले हो । आपका एक पग भी बिना सुगन्ध के आगे नहीं बढ़ता है । आपके सैकडों पग सुगन्धित इत्र से युक्त चलते हुए मन को मोहित करते हैं ।

जिनकी कीर्ति से सारी पृथ्वी कीर्तिमान हुई रहती है, ऐसे गरूनानक देव की ज्योति इस दुनिया में प्रगट हुई, जो नित्य रूप से आपका ध्यान करता है, उसे
आप अन्न - धन से परिपूर्ण कर देते हैं । आपके केसर के फूल के समान कोमल पैर हमारे मन को लुभाते हैं । आपकी कृपा जिनके ऊपर होती है, वह आप ही के नाम के गुणों का गान गाने लगता है ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.